15-8-68 (रूवास ध्यान देकरपः जी) ओम् शान्तिः प्रातः क्लास

आत्माअभिमानी होकर बैठे हो। बाप बच्चो को समझाते है कि अपने को आत्मा समझो। अब बाप आलराऊन्डर से पूछते है ~~कि=समझमें~~= देहली से आई हुई है। सतयुग मे आत्मअभिमनी होते है वां देहअभिमनी होने विना चल नही सकते है। (वहां तो आटोमेटिकली ही आत्मअभिमनी होकर रहते है बार-2याद करने की दरकार नही रहती है) हां वहां पर समझते है कि अब यह शारि बडा हुआ है। इसको अब छोड कर दुसरा नया लेना है। जैसे र्सप का मिसाल है नां उनकी खल जब पुरानी हो जाती है। तो उसको खुशी से छोड कर नई ले लेता है। वैसे ही आत्मा भी समझती है कि यह शारि पुरानाहुआ है इनको छोड कर हम नया ले लेते है। वो ही मिसाल जनावरो ~~को~~ का उठा कर बाप देते है। भगवन उदाहरण देकर समझाते है। यह सब मनुष्य तो विष्टा के कीडे है। इनको आपसमान ज्ञानवान बनाओ तो क्रिश्तानी विकारी से परिस्तानी निरविकारी बन सके। ऊंच ते ऊच पढाई तो है मनुष्य को देवता बनाना। ~~ज्ञान~~ गायन भी है कि मनुष्य को देवता ~~कैसे~~ किये33... किसने केया? देवताओं ने तो नही किया नां। भवान ने ही मनुष्यो को देवता किया। मनुष्य तसे समझते है कि कृष्ण ने~~ग~~ ही देवता बनाया है। परन्तु कृष्ण तो खुद ही देवता है नां। भगवान ही मनुष्य को देवता बनाते है। मनुष्य तो इन बातो को कुछ भी नही समझते है। तुमसे सब जगह पुछते है कि तुम्हारि ऐम आब्जेक्ट क्या है। तो क्यो नही लिखत मे वो छोटा सा पंचा छपा हुआ हो। जो कि कोई भी पूछे तो उनको पंचा दे दो कि जिससे ही समझ जावे। बाबा ने बहुत अच्छी रीती समझाया है। इस समय यह कलयुग पतित महान अपरमअपार दुःखधाम है। अब हम मनुष्यों को सतयुग महान सुखधाम की दुनियां में मनुष्यों को ले जाने की महान सर्विस कर रहे है। वा रास्ता बताते है। ऐसे नेही कि हम कोई को अदवैत नालेज देते है। अदवैत नालेज तो वो शास्त्रो की नालेज को समझते है। वास्तव मे कोई कोई अदवैत नालजे है नही। अदवैत नालेज तुम्हारा लिखना भी रांग है। मनुष्यों को तो बहुत ही क्लीयर कर बताना है। ऐसी लिखत छपी हुई हो कि वो झट समझ जावे कि इनका उदेश्य क्या है। कलयुगी पतित भ्रष्टाचारि अपार दुःखो से हम सतयुगी पवित्र श्रेष्टाचारि अपार सुखो मे ले जाते है। बाबा यह निबन्ध बच्चों को देते है। ऐसे ही क्लीयर करके लिखना है। सब जगह पर ही तुम्हारि ऐसी लिखत रखी हुई हो। झट वो निकाल कर दे देनी चाहिये। तो समझे कि हम तो दुःखधाम मे विष्टा के कीडे है। गन्द में पडे हुये है। विकारि को विष्टा का कीडा ही कहा जाता है। मनुष्य कोई समझते थोडेई है कि हम तो कलयुग अपार दुःखधाम मे~~म~~ रहने वाले मनुष्य है। जनावर मिस्ल है। यह हमको अपार सुखधाम मे ले जाते है। तो ऐसा ही अच्छा एक पंचा बनाना है। जैसे ही बाबा ने यह छपवाया है कि सतयुगी हो वां कलयुगी हो। परन्तु मनुष्य समझदार थोडेई है। बन्दर की ही तरह रत्नो को भी पत्थर समझ कर फेंक देते है। यह है ज्ञान रत्न। ~~म~~ तुम समझाते हो फिर भीसमझते नही है। समझते है कि शास्त्रो मे तो रत्न है यह तो हमको और ही पत्थर देते है। तुम क्लीयर करके ऐसे लिखो जो कि समझे कि हम तो अपार दुःखधाम मे ही बैठे है। दुखो की भी लिस्ट हो। कम से कम 10 तो जरूर हो। इस दुःखधा मे देःख कितने अपरमअपार है। इनकी लिस्ट निकालो की स्त्रीयां विधवा बनती है फेमनस पडते है। एक दो को मारते रहते है। सब लिखो कि बिच्छु मिस्ल बच्चे पैदा करते है। सारि लिस्ट निकालो। दुसरी तरफ फिर अपार सुख भी हो। वहां दुःख का नाम ही नही होता है। हम वो राज्य अथवा सुखधाम स्थापन कर रहे है। तो झट मनुष्यों का मुह बन्द हो जावेगा। यह कोई भी समझते थोडेई है कि इस समय दुःखधाम है। इसको ही तो स्वर्ग समझ कर बैठे हुये है। बडे-2 महल मन्दिर आद बनाते रहते है। यह थोडेई जानते है कि यह सब खत्म हो जाना है। पैस तो इनको बहुत मिलते है। रिशवत मे बाप ने समझाया है कि यही सब है माया का साईस का घमण्ड। झुठ खण्ड। इतनी बत्तियां ऐरोप्लेन आद यह सभी माया का ही पाम्प है। यह भी कायदा है कि जब बाप भी नई दुनियां स्थापन करते है तो माया ~~कि~~ भी अपना ममकाा दिखाती है। इसको ही कहा जाता है माया का पाम्प। अब तुम बच्चे जानते हो कि हम तो सारे विश्व मे इकछत्र स्थापन करते है।

अगर माया की कहीं पर भी प्रवेशता हो जाती है। तो बच्चों को अन्दर मे खाता है। जब कोई भी किसके नाम रूप मे फंस मरते है तो बाप समझाते है कि यह क्रिमनल आईज्ड है। कलयुग मे क्रिमनलआईजेशन है। सतयुग मे है सिवलाईजेशन। इन देवताओं के आगे सब माथा टेकते है। कहते है कि आप तो निर्विकारी सिवलआईज्ड हो। हम तो क्रिमनलआईज वाले है। इस लिय ही बाप कहते है कि (हर एक ही अपनी अवस्था को देखो) बड़े-2 महारथी भी अपने को देखे कि हमारी तो बुधी कहीं पर नही जाती है? फलानी बहुत अच्छी है। यह करें वा करें। कुछ अन्दर मे अता है? यह तो बाबा जानते है कि सम्पूर्ण तो सिलाईज्ड कोई बना ही नही है। वो तो बिलकुल ही जो पास विथ आनर है, आठ रत्न उनकी ही सिवललाईज्ड हो सकती है। सकती है। एक सौ आठ भी नही। जरा भी चलायमानी ना आवे बहुत मुशकल है। कोई बिरले ही ऐसे होते है। आरवे कुछ नां कुछ धोखा जरूर देती है। है तो ड्रामा। जल्दी से ही किसी की भी सिवल आईज्ड नही बनेगी। (खूब पुरुषार्थ करके अपनी ही जांच करनी है कि कहीं पर भी हमारी आरेव धोखा तो नही देती है) विश्व का मालिक बनना बहुत ऊंच मंजिल है। चढ़े तो चारों वैकुण्ठ रस गिरे तो ..... राजाओं का राजा बनें। प्रजा मे चले जावेंगें। आजकल तो कलयुगी विकारी जमाना है। भल कितने भी बड़े आदमी है समझो रानी है। उनके भी अन्दर मे धुक-2 होती है कि कहीं पर हमको उड़ा ना देवे। प्रेजीडेण्ट भी डरते है। कहीं पर भी आपस मे मिल कर हमको उड़ा नही देवे। नेवी और आर्मी अगर आपस मे मिल जावे तो बस। प्रेजीडण्ट को भी उड़ा कर अपना रख देगें। (सारी दुनियां मे ही इस समय अशान्तिः ही अशान्तिः है। हर एक मनुष्य मे अशान्ति है। यज्ञ मे रहने वाले बच्चे भी कितना अशान्त फैलाते है। शान्तिः स्थापन कर रहे है) (पहले तो खुद भी शान्त मे रहो तो ह दुसरो मे भी बल भरे।) वहां तो बड़ा शान्त का राज्य रहता है। आरवे भी सिवालाईज्ड बन जाती है। यहां तो क्रिमनलआईज्ड है। तो बाप कहते है कि (अपनीजांच करो कि आज मुझ आत्मा की वृती कैसी रही। इसमे ही बहुत-2 मेहनत है। अपनी सम्भाल रखनी है। बेहद के बाप को सच्च नही बताते है। कदम-2 पर ही भूल करते रहते है। थोड़ा भी किसीको उस नजर से देखा तो भूल हो गई।) यह भी नोट करो। 10-20-50 भूल तो करते ही है। जब तक कि अभुल बने। परन्तु सच्च कोई भी बताते थोड़ेई है। देहअभिमनीकुछ नां कुछ पाप जरूर होगें। वो ही अन्दर मे खाता रहेगा। कई तो समझ भी नही सकते है कि भूल किसको कहते है। जनावर समझते है क्या। मनुष्य भी जनावर बुधी है। तुम भी समझते हो कि इस ज्ञान से पहले तो हम भी बन्दर बुधी ही थे। अभी कोई पाच कोई दस परसेन्ट कोई कितना चेंज हो जाते है। यह आरेव तो बहुत ही धोखा देने वाली है। सबेस तीखी है ही आरेव। बाप समझाते है अपने को आत्मा समझो। तुम ओय भी नगे ही थे। शरीर ही नही था। अभी तुमको पता है क्या कि दुसरा कौनसा शरीर लेगें। किस समबन्ध मे जावेंगें। मालूम थोड़ेई पड़ता है। गर्भ मे सुन्न ही सुन्न रहते है। आत्म बिलकुल ही सुन्न हो जाती है। जब शरीर बड़ा होवे तो ही पता पड़े तो तुमको ऐसा ही बन कर जाना है। हम कुछ भी नही देखते है। सुन्न ही सुन्न बस। जब पुराना शरीर छोड़ कर हमको जाना है फिर जब शरीर लेगे तो फिर हम अपना पार्ट बजावेंगें। सुन्नन होने का भी अभी यही समय है। भल आत्म संस्कार ले जाती है तो वो भी जब शरीर बड़ा हो जाता है तो ही संस्कार ईर्मज होते है। लड़ाई वाला होगा तो उनके संस्कार ईर्मज होगें। फिरजाकर लड़ाई मे ही दाखिल होगें। पहले तो सुन ही सुन्न रहते है कुछ भी नही जानते है। जब तक कि शरीर बड़ा हो। तुमको भी अभी घर जाना है। जैसे कि अब पुरानी दुनियां है नही। यह दुनियां ही खत्म हो जानी है। फिर हम नई दुनियां मे आ जावेंगें। पहले हमको घर जाना है। इसलिय ही इस पुरानी दुनियां का इस शरीर का भान ही उड़ा देना है। कुछ भी याद नही रहे।

परहेज बहुत रखनी होती है। जो अन्दर मे होगा वो ही बाहर मे होगा। शिव बाब के अन्दर मे भी यह ज्ञान है नां किमेशा यह पाँइ है। मेरे लिय ही कहते है कि (ज्ञान का सागर सुख का सागर शान्तिः का सागर) महिमा गाते है परन्तु आप नही समझते है। जैसे बच्चों को सिखाओ वो ही कहते रहते है। यह भी महि-

गाते हैं परन्तु समझते बिल्कुल ही नहीं हैं। तोते मिसल कह देते। वह हर बात में सागर ही सागर है। अभी तुम अर्थ सहित जानते हो। मनुष्य कुछ भी नहीं जानते। एक तरफ महिमा गाते फिर कह देते सर्वव्यापी है। बुधि कितनी चट खाते ही पड़ी है। उनको कहेंगे 100प्रतिशत मैडचैप्स। जो कुछ कहते हैं समझते कुछ भी नहीं। है मनुष्य परन्तु बुधि जनावरों से भी जट है। आत्मा की बुधि ऐसी वर्थ नाट अपैनी हो जाती है। अभी बाप कितना बुधिवान बनाते हैं। मनुष्यों के पास तो करोड़ों पदम हैं। यह माया का पाम है ना। बाबा ने समझाया था जो कुछ भी सीखते रहते हैं सांयस। उनमें तो जो अपने काम की चीज़ें हैं वह जरूर वहां भी होंगे। वह बनाने वाले वहां भी जावेंगे। राजा तो नहीं बनेंगे। बाकी पिछाड़ी में आवेंगे। यह लोग पिछाड़ी में तुम्हारे पास आवेंगे फिर औरों को भी सिखलावेंगे। एक बाप से ही तुम कितने सीखते हो। एक बाप द्वारा ही दुनिया क्या से क्या बन रही है। इन्वेन्शन हमेशा एक ही निकालते हैं ना। फिर वह फैलती है। बम्स बनाने वाला भी पहले एक था। समझा इन से तो दुनिया ही विनाश हो जावेगा। फिर और भी बनाते गये ढेर हो गये। सभी कहते हैं हम भी बना सकते हैं वहां भी यह सांयस तो चाहिए नाटटाईम पड़ा है। सीखकर होशियार हो फिर आवेंगे। बाप की पहचान मिल गई फिर स्वर्ग में आकर नौकर चाकर बनेंगे। वहां सभी दुःख की ही बातें होती है। जो भी सुखधाम में था वह फिर होगा। सतयुग पैराडाईज हैविन सुखधाम था। वहां कोई रोग दुःख आदि की बात ही नहीं। यहां तो अपरमअपार दुःख है। वहां तो अपरमअपार सुख होता है। अभी हम यह स्थापना कर रहे हैं। (दुःख हर्त्ता-सुख कर्त्ता एक बाप ही है) पहले तो खुद की भी अवस्था अच्छी चाहिए। सिर्फ पंडिताई नहीं चाहिए। जैसे एक पंडित की कथा है ना। बोला राम नाम जपने से सागर पार हो जावेंगे। है इस समय की बात। तुम बाप की याद से ही विषय सागर से क्षीर सागर में चले जाते हो। तो पंडित ने जिनको कहा वह राम नाम करते पार हो गई। पैसा खर्चे से बच गई। फिर पंडित को भी निमंत्रण दिया कि आप भी चलो। बोला बोट कहां ?..... तो यह दृष्टान्त देते हैं। यहां तो तुम बच्चों की अवस्था बड़ी अच्छी चाहिए। योगबल नहीं है। क्रिमनलाईन्ड है तो उनका भी तीर नहीं लग सकता। आंखें रिफ्लेक्ट चाहिए। योग पूरा चाहिए। बाप की याद में रहकर किसको ज्ञान देंगे तो तीर लग जावेगा। ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिए। नालेज से धन की कमाई होती है। ताकत है याद की। बहुत बच्चे तो बिल्कुल याद करते ही नहीं हैं। जानते ही नहीं। शास्त्रों की बक2 सुनते रहते हैं। बक बक सनते2 तमोप्रधान हो गये हैं। अभी यह तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। मनुष्यों को समझाना है यह है दुःखधाम। सतयुग है सुखधाम। कलियुग में अपरम अपार दुःख है। सुख का नाम नहीं। अगर है भी तो काग बिष्टा समान सुख है। बाप भी कहते हैं इस समय सुखकाग बिष्टा समान है। सतयुग में अपार सुख है। मनुष्य भल अक्षरकहते हैं परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। मुक्ति के लिए ही माथा मारते रहते। जीवनमुक्ति को तो कोई जानते ही नहीं तो ज्ञान भी कैसे दे सकते हैं। वह तो आते ही हैं रजो प्रधान समय में। वह फिर राजयोग कैसे सिखावेंगे। यहां तो सुख काग बिष्टा समान। राजयोग से क्या हुआ यह भी कोई नहीं जानते हैं। वह तो समझते हैं वहां भी दुःख था। राम की सीता चुराई गई। कृष्ण को भी कंस के डर से बाप ने भगा लिया ले गया। इन शास्त्रों के बातें सुनने कारण समझते हैं वहां भी कोई सुख नहीं है। भक्ति मार्ग माना ही दुर्गति मार्ग। ज्ञान कोई है नहीं। तुम किसको कहो तो कहेंगे भक्ति दुर्गति है? लड़ने लग पड़ेंगे। यह सभी ड्रामा चल रहा है। अखबार में भी निन्दा करते हैं। यह तो होना ही है। अबला पर किसम2 के सितम आते हैं। दुनिया में तो अनेक दुःख हैं। अभी कोई सुख थोड़े ही है भल कितना भी साहुकार हो। बुखार हुआ, अंधा हुआ, अपंग हो गया। तो दुःख होता है ना। कोई न कोई रोग मनुष्यों को लग पड़ा है। दुःख के लिस्ट भी अभी लिखो। रावण राज्य कलियुग के अन्त में यह2 बातें होती है। सतयुग में दुःख की एक भी बात नहीं होती। सतयुग तो होकर गया है ना। अभी है संगम युग। बाप भी संगम पर ही आते

हैं। अभी तुम जानते हो 5000 वर्ष में हम क्या2 जन्म लेते हैं। कैसे सुख में फिर दुःख में आते हैं। सभी तो ऐसे नहीं समझ सकते। जिनको सारा ज्ञान बुधि में धारण है वह समझ सकते हैं। बाप तुम बच्चों की झोली भरते हैं। तो तुमको फिर औरों की झोली भरनी है। गायन भी है ना धन दिये धन ना खूटे। धन दान नहीं करते हैं तो गोया उनके पास नहीं हैं। नहीं तो फिर मिलेगा भी नहीं। हिसाब है ना। देते ही नहीं तो फिर मिलेगा कैसे। बुधि कैसे होगा। यह सभी है आवनाशी ज्ञान रत्न। नम्बरवार तो हर बात में होते हैं ना। यह भी तुम्हारी रूहानी रेस है। कोई रूह जाकर ऊंच पद पावेंगे कोई रूह जाकर प्रजा पद पावेंगे जैसे कल्प पहले लिया है। एक कल्प की बात नहीं। अनगिनत बार लिया है। गिनती कर नहीं सकते हो तुम कितना बारी सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बने हो। फिर कितना समय रावण के कारण नीचे चले गये। यह तो बिल्कुल ही वन्डर फुल बातें हैं। गुह्य ते गुह्य। कोई भी आते हैं पहले2 तो यह बताओ दुःखधाम और सुखधाम को तो समझते हो। सतयुग से त्रेता अन्त तक सुख ही सुख है। त्रेता में भी दो कला कम हो ती हैं। वह तो नई दुनिया बनती है ना। चन्द्रवंशी को भी नई दुनिया नहीं कहेंगे। वह है सेमी। यहां नर्क फिर एकदम रौरव नर्क कहा जाता हैं। इस समय बिल्कुल ही चट खाते में है। तब फिर बाप आकर स्वर्ग में ले जाते हैं। जो नापास होते हैं वह सेमी स्वर्ग में आ जाते हैं। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप कितनी अच्छी3 समझानी देते हैं। अपना काम ही है सर्विस करना। जो आवे उनको आप समान बनाना है। देहअभिमान में न आना है। सर्विस ही सर्विस। मुझे तो सर्विस ही करनी है। और झंझटों में जाने से बुधि उस तरफ चली जावेगी। हमको तो सर्विस ही सर्विस में लगा रहना है। और हिसाब किताब रखने में लगे तो डिग्रेड हो जावेगी। सर्विस बिगर और कोई स्थूल काम सिर न रखना चाहिए। वह फिर देह-अभिमान में आना हो जाता है। मैं तो सर्विस करूं, बाबा भी सर्विस करते रहते हैं ना। सर्विस ही करनी है। बस। रात दिन सर्विस। यह कमाई है ना। योग में रहकर सर्विस करते रहो तो तुमको कब थकावट नहीं होगी। बड़ी भारी कमाई है। बाकी मर्तबा आद लेना तो वह अल्प काल के लिए पाई पैसे का मर्तबा हो जावेगा। हुकुम चलाने वाले पुराने सासू ससुरे हो जाते हैं। बाप कहते हैं इन बातों में टाईम ब्रेकेस्ट मत करो। यहां तो मनुष्यों को अपार दुःख हैं। उन्हों को अपार सुखों में ले चलो। और सभी बातों को छोड़ सर्विस ही सर्विस में लग जाना चाहिए। बन्दरों मिसल मनुष्य हैं उन्हों को कैसे समझावें। मनुष्यों को सुखी बनाना है। खुद ही अशान्ति फैलावेंगे तो उनकी क्या बुरी गति होगी। तुम प्रण करते हो हमको शान्ति स्थापन करना है तो तुमको खुद फिर अशान्ति थोड़ी ही होना चाहिए। मिलिट्री के आगे ऐसा कुछ करते हैं तो एकदम शुट कर देते हैं। तुम औय ही हो मनुष्यों को शान्ति सुखी बनाने। तो पहले खुद को ही शान्ति करना है। स्थूल सर्विस भी शान्ति से करनी है तो उनका भी फल क्यों नहीं मिलेगा। अशान्ति से तो डिग्रेड हो जावेंगे। इसको फिर ब्रह्माचारी कहा जाता हैं। देह-अभिमान में आने से बहुत नुकसान कर देते हैं। वह जैसे राहू की दशा बैठ जाती हैं। सेकण्ड में ही दशा बदल जाती है। बैठे2 क्रिमनल आई हो जाती है। कशिश हुई बस गिरा गटर में। फिर कहते बाबा काला मुंह कर दिया। तो राहू की दशा बैठती है ना। यह इन आंखों ने काम किया। इसलिए सूरदास की कथा है। तो उसने अपनी आंखें ही निकाल दी। यह मिसाल देते हैं। फिर गटर में गिर पड़ते हैं। बाबा शुरू में भी कहते थे माथा मूढ़वा कर फिर गटर में पर जाओ।

यह जो रावण का चित्र है उसमें नीचे में सारा यह क्लीयर लिखना चाहिए कलियुग में अपरमअपार दुःख है। वह सभी दुःख देना चाहिए। फिर इन ल0ना0 के राज्य में अपार सुख होता है। दुःख का नाम निशान नहीं। यह है एमआबजेक्ट। ऐसी सर्विस करनी चाहिए।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

-:* शिव बाबा याद है *:-